पशुओं को सर्दी से बचायें

पशुपालकों द्वारा सर्दी के मौसम में पशुओं की उचित देखभाल नहीं करने के अभाव में पशुधन की उत्पादन क्षमता प्रभावित होने के साथ–साथ पशु के स्वास्थ्य पर भी विपरीत प्रभाव पड़ता है। गर्मी के साथ– साथ सद्दी भी समयानुसार जन जीवन को प्रभावित करती है। ठण्ड के साथ–साथ शीत लहर पशुओं को बहुत अधिक प्रभावित करती है। पशुओं के पास गुजरती ठण्डी हवा पशु शरीर से गर्मी सोख लेती है जिससे उसके शरीर का तापमान कम हो जाता है, इसलिए ठण्ड व शीत लहर से बचाने के लिए उचित प्रबन्ध करना चाहिए।

पशुपालक प्रायः ठंड से पशुओं को बचाने हेतु बंद कमरे अथवा बाडो में बांध देते हैं तथा सुबह जल्दी ही पशुओं को बाहर निकाल देते हैं। पशु विशेषकर ठंड के प्रति अत्यधिक संवेदनशील होते हैं। पशु बाडे में पर्याप्त सूखा स्थान नहीं रहना, पशु का रात भर मल–मूत्र में खडा रहना, और अचानक ठंड बढ जाने पर व्यापक प्रबन्ध के अभाव में पशु को सर्दी लग जाती है जिससे खांसी, चारा नहीं चरना, निमोनिया आदि से पशु ग्रसित हो जाता है।

➢ पशुओं को ठण्ड से बचाव के लिए पशुपालक भाई ध्यान रखें

- रात्रि में पशुओं को बाहर खुले में नहीं बांधें।
- पशु को मोटा कपडा, कम्बल या बोरा ओढावें, अधिक सर्दी होने पर आग जलाकर पशु को गर्मी देवें लेकिन कमरे का धुआं बाहर निकलने का प्रबंध रखें।
- पशु को ताजा और स्वच्छ जल पिलायें।
- पक्के फर्श पर बिछावन मुलायम एवं नमी रहित रखें।
- पशु को दिन के समय खुली धूप में बांधें तथा पशु को सीधी ठंडी हवाओं से बचायें।
- पशुओं के सींग पर भी कपड़ा बांधें।
- बछडें बछडियों को उचित मात्रा में दूध पिलायें।
- समय पर कृमिनाशक औषधि पिलायें।

सर्दी के मौसम में पशु सर्दी जुकाम से तो सामान्य रूप से प्रभावित होते है। सर्दी के समय प्रदेश के कई हिस्सों में तो तापमान 0 डिग्री सेल्सियस से भी नीचे चला जाता है। यदि ऐसे में पशु की देखभाल उचित ढंग से नहीं की जावे, तो पशु निमोनियां नामक रोग से ग्रस्त हो जाते हैं व ठीक होने में काफी समय लग जाता है तथा चिकित्सा के अभाव में पशु की मृत्यु भी हो सकती है जिससे पशुपालक को आर्थिक नुकसान उठाना पडता है।

➢ निमोनिया रोग क्या है ?

निमोनिया रोग यू ंतो प्रत्येक मौसम में हो सकता है, मगर जाडे में यह बहुत अधिक होता है। इस रोग में वायु नलिकाओं तथा फेफडों में सूजन आ जाती है। जिसके कारण पशु को सांस लेने में कठिनाई होती है।

➢ क्या निमोनिया रोग पशुओं में भी घातक हो सकता है ?

सभी किस्म के पशु चाहे वें छोटे हो अथवा बडे निमोनिया रोग से ग्रसित हो सकते है, वैसे इस रोग का प्रकोप छोटे पशुओं जैस भेड, बकरी,बछडे अथवा बछडियों में अत्यधिक होता है, यहां तक कि इस रोग से प्रभावित पशु की मृत्यु तक हो सकती है।

➢ निमोनिया रोग किन कारणों से होता है ?

- अनेक प्रकार के जीवाणु तथा वायरस इस रोग को उत्पन्न करने का सामर्थ्य रखते हैं, अगर पशु के शरीर में अनुकूल वातावरण मिल जाए, या पशु के शरीर में बीमारी से बचाव की शक्ति कम हो तो ये जीवाणु रोग उत्पन्न करने में सफल हो जाते हैं। कुछ परजीवी फेफडों और उसकी वायु नलिकाओं में पहुंच कर निमोनिया पैदा कर देते हैं।

- यदि फेफडों के अन्दर कोई खाघ पदार्थ, औषधि, तेल, कील, कांटा इत्यादि पहुंच जाए तो भी यह रोग हो जाता है। प्रायः गांवों में देखा गया है कि छोटी उम्र के पशु को बल पूर्वक अथवा लापरवाही के साथ दवा पिला दी जाती है,जिससे दवा पेट मे जाने के साथ साथ फेफडों में भी चली जाती है, और अन्ततः पशु को निमोनिया हो जाता है।

➢ **अन्य कारणः**

- पशु को बांधने की जगह पर गन्दगी होने से अनेक प्रकार के जीवाणु तथा परजीवी के लिए अनुकूल वातावरण बन जाता है।
- पशु आवास में खिडकियों तथा रोशनदानों का अभाव होने से ताजी एवं शुद्ध हवा नहीं मिलती है।
- तेज और ठंडी हवाएं, अंधेरा या सीलन भरी या गीली जगहों को होना रोग की उत्पति में सहायक है,अगर थोडी जगह में अनेक जानवर बांध दिए जाएं तो ऐसे भीड भरे वातावरण से भी रोग फैलने मे मदद मिलेगी।
- जाडे में पक्के फर्श पर पर्याप्त बिछावन का नहीं होना।
- अपर्याप्त भेजन और बिना आराम कराए पशु को लम्बी और थकान भी यात्रा कराने से भी यह रोग हो जाता है, अगर ऐसी यात्रा ठंडे और बदली के मौसम में हो तो रोग की सम्भावना बहुत बढ जाती है।

➢ **रोगी पशु में किस तरह के लक्षण दिखाई देते हैं ? जिससे पशुपालक यें समझ सके कि पशु को निमानिया रोग हो गया है ?**

- पशु को भूख नहीं लगती है तथा वह सुस्त हो जाता है।
- सांस तेज और अल्प होती है सांस लेते समय ताकत लगानी पडती है।पशु अगले पैरों को दूर फैलाकर खडा होता है। या छाती की हडडी के सहारे जमीन पर लेट जाता है जिससे सांस लेने में आराम रहता है तथा पशु मुंह खोलकर सांस लेता है।
- पशु अपनी जीभ बाहर निकाल लेता है उसके नथुने फूल जाते हैं एवं थूथन गर्म और सूखे रहते हैं।
- जुखाम एवं खांसी के सभी लक्षण दिखाई देते हैं रोगी पशु कांपता हैं उसकी आंखें लाल और नब्ज तेज हो जाती है। उसके मुंह और नाक से पानी जैसा पतला या गाढा द्रव निकलता है जो कभी कभी मोटे धागे की भांति नाक से लटकने लगता है।
- पशु को काफी तेज बुखार हो जाता है।
- कम उम्र के पशुओं में निमोनिया के साथ साथ दस्त भी होने लगते हैं।
- छाती पर कान लगाने पर घरघराहट की आवाजे सुनाई पडती है जो रोग के बढने पर अधिक तेज हो जाती है।
- अगर निमोनिया के कारण फेफडो में सडन या मवाद हो गयी हो तो पशु द्वारा निष्कासित वायु में बदबू आती है।

➢ निमोनिया रोग हो जाने पर पशुपालक अपने पशु की देखभाल किस तरह करें ?

- सबसे पहले पशु को गर्म स्थान पर बांध देवें और उसे मोटे कपडे, कम्बल या बोरा ओढा दे जिससे पशु को सर्दी महसूस नहीं हो, जाडे के मौसम में आग जलाकर भी पशु को गर्मी दी जा सकती है।
- रोगी पशु को बांधन के स्थान पर शुद्ध और ताजा हवा का प्रबंध हो, खिडकी तथा रोशनदान खुले रखें साथ ही यह भी ध्यान रखें कि अधिक शीतल और तेज हवाएं रोगी पशु का न लगने पाएं।
- ताजे और साफ जल का प्रबंध करें।
- पक्के फर्श पर बिछावन मुलायम एवं नमी रहित होना चाहिए।
- रोगी के बांधने की जगह साफ रखें तथा कीटाणुनाशक दवाइयों का प्रयोग करें।
- रोगी पशु को हल्का, पोष्टिक एवं शीघ्र पचा सकने वाला चारा देवें, भारी भोजन स्वस्थ होने के बाद धीरे–धीरे ही दिया जावे पशु जब तक निर्बल रहे उससे तब तक कार्य न लेवें।

➢ निमोनिया रोग हो जाने पर पशु का उपचार कैसे करें ?

- पशुपालक को तुरन्त नजदीकी पशु चिकित्सालय से सम्पर्क रोगी पशु का उपचार करवाना चाहिए इस रोग मे सल्फा दवाईयां, पेनिसिलिन, टेरामाइसिन आदि का उपयोग करने से रोगी पशु को शीघ्र लाभ मिलता है लेकिन इन दवाईयों का उपयोग पशु चिकित्सक के परामर्श से ही करना चाहिए।
- सल्फा दवाईयां देते समय यह ध्यान रखा जाये कि पशु को पानी प्रचुर मात्रा में दिया जाना चाहिए इस रोग में दस्त लाने वाली और पिलाने वाली दवाईयां अधिकांशतः नहीं दी जाती है।